आज अगर देश की बात करें, देश की विचारधाराओं की बात करें तो यह एक गलत बात होगी । मैं यह नहीं कहता कि वे गलती कर रहे हैं, लेकिन वे गुमराह जरूर हैं इसी दिन को मनाने के बाद मैं समझता हूं हम लोग जरूर अपने मंजिले मकसूद पर पहुंच सकते हैं ।

जो आश्वासन मंत्री महोदय की तरफ से दिया गया कि वह इस को नेशनल इंटेग्रेशन काउन्सिल के पास भेजेंगे, उस को मैं स्वीकार करता हूं और जिन मुअज्जिज दोस्तों ने इस का समर्थन किया है, उन की इजाजत से और साथ ही साथ आप की इजाजत से मैं अपने इस रेज्योल्यूशन को वापस लेता हूं । मैं नहीं चाहता कि विद्यार्थी जी के इस प्रस्ताव के भी उसी तरह से टुकड़े टुकड़े कर दिये जायें जिस तरह से विद्यार्थी जी के टुकड़े टुकड़े कर दिये गये थे । मैं नहीं चाहता कि इस प्रस्ताव के टुकड़े टुकड़े हों । मैं चाहता हूं कि यह प्रस्ताव इसी तरीके से रहे । जो भावनायें यहां पर व्यक्त की गई हैं उन को मैं विद्यार्थी जी के शहर कानपुर में जहां की जनसंख्या आज दस लाख है जा कर रखूंगा । मैं आशा करता हूं कि काउन्सिल में जा कर इसका कोई उचित फैसला होगा और काउन्सिल के मैम्बर भी इस का समर्थन करेंगे । पोलिटिकल पार्टीज जो यहां है और जो काउन्सिल में भी हैं, उन से मैं निवेदन करता हूं कि वे अवश्य इस का समर्थन करें ।

इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव को वापस लेता हूं ।

The resolution was, by leave, withdrawn.

16.43 hrs.

RESOLUTION *RE* NATIONALISATION OF FILM INDUSTRY

श्री अ० मु० तारिक : (जम्मू तथा काश्मीर): वक्त के बारे में जनाब क्या—

उपाध्यक्ष महोदय : पन्द्रह मिनट है, चाहें तो आप ले लें और चाहें तो पांच मिनट लें और कुछ समय दूसरों को दें ।

श्री अ० मु० तारिक : पांच मिनट मैं लेता और बाकी मिनिस्टर साहब ले लें । मेरा रेज्योल्यशन इस तरह से है—

> "यह हाउस सरकार से मांग करता है कि फिल्म इंडस्ट्री के नेशनेलाइजेशन के सवाल पर गौर करने के लिये पार्लियामेंट के मैम्बरों और फिल्म इंडस्ट्रियलिस्टों की एक कमेटी बनाई जाये ।"

इस सिलसिले में एस्टीमेट्स कमेटी ने अपनी १९६१–६२ की १५९ वीं रिपोर्ट में पैरा ९० में जो बात कही है उस की तरफ मैं आप की तवज्जह दिलाना चाहता हूं । उस ने कहा कि मौजूदा दुनिया में हिन्दुस्तान एक ऐसा तीसरा मुल्क है जहां फिल्म इंडस्ट्री काफी फैली हुई है । इस के साथ ही उस ने यह भी कहा है कि हमारे फिल्म बनाने वालों का जो रुझान है वह पैसा बनाने की तरफ ज्यादा है इंडस्ट्री की खिदमत करने की तरफ कम है । आगे चल कर उस ने सिफारिश की है कि ऐसी काउन्सिल बनाई जाये जो फिल्म इंडस्ट्री के मामलात में जाये ।

जहां तक फिल्म इंडस्ट्री का ताल्लुक है, इस में कोई शक नहीं है कि मुहज्जब मुल्कों में जहां यूनिवर्सिटियां या दरगाहें कौमों को बनाती हैं वहां इस काम में फिल्में भी काफी पार्ट अदा करती हैं । इस लिहाज से हमारा यह फर्ज हो जाता है कि हम इस मसले पर गौर करें ।

जहां तक हमारे मुल्क का ताल्लुक है, यह इंडस्ट्री ऐसे लोगों के हाथ में है जो फिल्म लाइन से बिल्कुल नावाकिफ है । बहुत से लोग ऐसे हैं जो इस के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं, कुछ भी नहीं पढ़ा है, लेकिन पैसे के बलबूते

[श्री अ० मु० तारिक]

पर बड़े बड़े प्रोड्यूसर और डायरेक्टर बन गये हैं। उन के मुकाबले में इसी इंडस्ट्री में बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो निहायत काबिल हैं, आलिम हैं, लेकिन उन्हें खाने तक को नहीं मिलता है, उन्हें कहीं से रोजगार तक दस्तयाब नहीं होता है।

16.45 hrs.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

इस इंडस्ट्री पर कुछ लोग इस तरह से छाये हुए हैं कि एक एक फिल्म में काम करने के लिये वे सात सात और आठ आठ लाख रुपया लेते हैं। दूसरी तरफ बहुत से लोग ऐसे हैं और उन की तादाद हजारों में है जो फिल्मों को बनाने में मदद देते हैं, चाहे वे कैमरा मैन हैं, म्यूजिक डायरेक्टर हैं, गाना लिखने वाले हैं या दूसरे छोटे छोटे अदाकार हैं, उन को रोटी भी दस्तयाब नहीं होती है। यही नहीं बहुत से लोग इस इंडस्ट्री में हैं जिन की तादाद हजारों में है जिन से काम तो ले लिया जाता है लेकिन कई कई महीनों तक उन्हें पैसों की अदायगी नहीं होती है।

दूसरी चीज हमें यह देखनी है कि क्या इस इंडस्ट्री में कुछ लोग इस तरह के हैं या नहीं जो खाली दौलत ही बनाते हैं या मुल्क की भी कुछ खिदमत करते हैं। हम ने देखा है कि फिल्मी दुनिया में काम करने वले लोग बहुत कम हैं जो फिल्म की अहमियत और फिल्म के टैक्नीक से वाकफियत रखते हैं। अकसर लोग इस में ऐसे हैं जो खाली फाइनैंशियर होने की हैसियत से बड़े बड़े सरमायेदार और सेठ होने की हैसियत से, इस इंडस्ट्री पर कब्जा जमाये हुए हैं।

चूंकि वक्त कम है इस वास्ते मैं बहुत से मामलात पर तवज्जह नहीं दिलाना चाहता। लेकिन एक बात जिस का वजीर साहब को इल्म है यह है कि हजारों इंसान इस फिल्मी दुनिया में ऐसे हैं जो फिल्मों में काम करते हैं लेकिन उनके साथ फिल्म इंडस्ट्री का सलूक और फिल्म इंडस्ट्री का रवैया बहुत खराब है और मैं वजीर साहब से पूछना चाहता हूं कि क्या उन के लिये भी वह कुछ करने का इरादा रखते हैं या नहीं। बड़े बड़े कारखानों के लिये हुकूमत ने कानून बनाये हैं जिन के जरिये मजदूरों या उन में काम क वाले दूसरे लोगों को पूरा मुआवजा मिलता है. उन की पूरी कद्र की जाती है। इसी तरह से मैं वजीर साहब से पूछना चाहता हूं कि क्या वह यह एश्योरेंस दे सकते हैं कि फिल्मी दुनिया में छोटे छोटे लोगों को जो इस में काम करते हैं, उन्हें भी वह रियायतें मयसर होंगी। क्या लाखों रुपया कमाने वालों में और उन में जो दस दस और बीस बीस रुपया कमाते हैं किसी तरह का तवाजुन कायम करने की कोशिश की जायेगी। आखिर कोई गज तो होगा जिस से हम नापेंगे।

रेजोल्यूशन को नहीं लेकिन मैं समझता हूं कि इस बात को वह तसलीम करेंगे कि एक कमेटी बनाये जाने की जरूरत है जो मैम्बर्स पार्लियामेंट और फिसम इंडस्ट्रियलिस्ट्स पर मुशतमिल हो ताकि वह इन सारे मामलात में जा सके और हुकूमत के सामने एक ऐसी स्कीम पेश कर सके जिस से फिल्मी दुनिया में लाखों रुपये गबन करने वालों और उजरत पाने वालों के दर्म्यान एक तवाजुन कायम हो सके।

[شری ع - م - طارق - وقت کے بارے میں جواب کیا .

اپادھیکشہ مہودے - پندرہ منٹ ہیں - چاہیں تو آپ لیلیں اور چاہیں تو پانچ منٹ لیلیں اور کچھ سے دوسروں کو دے دیں -

شری ع - م - طارق - پانچ منٹ میں لیتا ہوں اور باقی

جہاں تک ہمارے ملک کا تعلق ہے یہ انڈسٹری ایسے لوگوں کے ہاتھ میں ہے جو فلم لائن سے بالکل ناواقف ہیں - بہت سے لوگ ایسے ہیں جو اس کے بارے میں کچھ بھی نہیں جانتے ہیں - کچھ بھی نہیں پڑھا ہے - لیکن پیسے کے بلبوتے پر بڑے بڑے پروڈیوسر اور ڈائرکٹر بن گئے ہیں- ان کے مقابلے میں اس انڈسٹری میں بہت سے ایسے لوگ بھی ہیں جو نہایت قابل ہیں لیکن انہیں کھانے تک کو نہیں ملتا ہے انہیں کہیں سے روزگار تک دستیاب نہیں ہوتا ہے -

16:45 hrs.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

اس انڈسٹری پر کچھ لوگ اس طرح چھائے ہوئے ہیں کہ ایک ایک فلم میں کام کرنے کے لئے وہ سات سات اور آٹھ آٹھ لاکھ روپیہ لیتے ہیں - دوسری طرف بہت سے لوگ ایسے ہیں اور ان کی تعداد ہزاروں میں ہے جو فلموں کو بنانے میں مدد دیتے ہیں چاہے وہ کیمرا مین ہیں - میوزک ڈائرکٹر ہیں - گانا لکھنے والے ہیں یا دوسرے چھوٹے چھوٹے اداکار ہیں - ان کو روٹی بھی دستیاب نہیں ہوتی ہے - یہی نہیں بہت سے لوگ اس انڈسٹری میں ہیں جنکی تعداد ہزاروں ہے جن سے کام تو لے لیا جاتا ہے لیکن کئی کئی مہینوں تک انہیں پیسوں کی ادائیگی نہیں ہوتی ہے - دوسری چیز ہمیں یہ دیکھنی ہے کہ کیا اس انڈسٹری میں منسٹر صاحب لے لیں - میرا ریزولیشن اس طرح سے ہے -

یہ ہاؤس سرکار سے مانگ کرتا ہے کہ فلم انڈسٹری کے نیشنلائزیشن کے سوال پر غور کرنے کے لئے پارلیمنٹ کے ممبروں اور فلم انڈسٹریلسٹوں کی ایک کمیٹی بنائی جائے - اس سلسلہ میں ایسٹیمیٹس کمیٹی نے اپنی ۱۹۶۱-۶۲ کی ۱۵۹ویں رپورٹ کے پیرا ۹۰ میں جو بات کہی ہے اس کی طرف میں آپ کی توجہ دلانا چاہتا ہوں - اس نے کہا ہے کہ موجودہ دنیا میں ہندوستان ایک ایسا تیسرا ملک ہے جہاں فلم انڈسٹری کافی پھیلی ہوئی ہے - اس کے ساتھ ہی اس نے یہ بھی کہا ہے کہ ہمارے فلم بنانے والوں جو رجحان ہے وہ پیسہ بنانے کی طرف زیادہ ہے اور انڈسٹری کی خدمت کرنے کی طرف کم ہے - آگے چل کر اس نے سفارش کی ہے کہ ایک ایسی کونسل بنائی جائے جو فلم انڈسٹری کے معاملات میں جائے -

جہاں تک فلم انڈسٹری کا تعلق ہے اس میں کوئی شک نہیں ہے کہ مہذب ملکوں میں جہاں یونیورسٹیاں یا درسگاہیں قوموں کو بناتی ہیں وہاں اس کام میں فلمیں بھی کافی پارٹ ادا کرتی ہیں - اس لحاظ سے ہمارا یہ فرض ہو جاتا ہے کہ ہم اس مسئلہ پر غور کریں -

لوگوں کو جو اس میں کام کرتے ہیں انہیں بھی یہ ریایتیں میسر ہونگی - کیا لاکھوں روپیہ کمانے والوں میں اور ان میں جو دس دس اور بیس بیس روپیہ کماتے ہیں کسی طرح کا توازن قائم کرنے کی کوشش کی جائیگی - آخر کوئی گز تو ہوگا جس سے ہم ناپیں گے - ریزولیوشن کو نہیں لیکن میں سمجھتا ہوں کہ اس بات کو وہ تسلیم کریں گے کہ ایک کمیٹی بنائے جانے کی ضرورت ہے جو ممبرز پارلیمنٹ اور فلم انڈسٹریلسٹس پر مشتمل ہو تاکہ وہ ان سارے معاملات میں جا سکے اور حکومت کے سامنے ایک ایسی سکیم پیش کر سکے جس سے فلمی دنیا میں لاکھوں روپیہ غبن کرنے والوں اور اجرت پانے والوں کے درمیان توازن قائم ہو سکے-]

Mr. Speaker: Resolution moved:

> "This House calls upon the Government to appoint a Committee consisting of Members of Parliament and film industrialists to go into the question of nationalisation of the Film Industry."

The Minister of Information and Broadcasting (Dr. Keskar): Mr. Speaker, the Resolution of the hon. Member is so sweeping in its generalisation that it will be difficult for me to reply to it within the few minutes that are at my disposal. He has in his very short but trenchant speech made a reference to two different matters—one is the observation of the Estimates Committee that there should be a Council which should go into the affairs of the film industry and the

[شری ع - م طارق]

کچھ لوگ اس طرح کے ہیں یا نہیں جو خالی دولت ہی بناتے ہیں یا ملک کی بھی کچھ خدمت کرتے ہیں - ہم نے دیکھا ہے کہ فلمی دنیا میں کام کرنے والے لوگ بہت کم ہیں جو فلم کی اہمیت اور فلم کے ٹیکنیک سے واقفیت رکھتے ہیں - اکثر لوگ اس میں ایسے ہیں جو خالی فائنینشر ہونے کی حیثیت سے اس انڈسٹری پر قبضہ جمائے ہوئے ہیں -

چونکہ وقت کم ہے اس واسطے میں بہت سے معاملات پر توجہ نہیں دلانا چاہتا - لیکن ایک بات جس کا وزیر صاحب کو علم ہے یہ ہے کہ ہزاروں انسان اس فلمی دنیا میں ایسے ہیں جو فلموں میں کام کرتے ہیں لیکن ان کے ساتھ فلم انڈسٹری کا سلوک اور فلم انڈسٹری کا رویہ بہت خراب ہے اور میں وزیر صاحب سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا ان کے لئے وہ کچھ کرنے کا ارادہ رکھتے ہیں یا نہیں - بڑے بڑے کارخانوں کے لئے حکومت نے قانون بنائے ہیں جن کے ذریعہ مزدوروں یا ان میں کام کرنے والے دوسرے لوگوں کو پورا معاوضہ ملتا ہے - ان کی پوری قدر کی جاتی ہے - اس طرح سے میں وزیر صاحب سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا وہ یہ ایشورنس دے سکتے ہیں کہ فلمی دنیا میں چھوٹے چھوٹے

other is his own objective, or rather desire, that the said Council should look into the question of the nationalisation of the film industry.

It is not possible for Government to give an opinion on such an important subject in such a short time, but I might draw the attention of the hon. Member to the fact that an industry which requires artistic initiative and imagination might not very easily flourish under the discipline of nationalisation. I am meaning the word nationalisation in the stricter sense of the word. Therefore I do not think that it might be in the best interests of film production—I am not saying the film industry—to have nationalisation in the ordinary sense of the word.

At the same time I am aware of some of the problems that face the industry, more specially about the technicians and workers of the industry to which the hon. Member has made a reference. There is no doubt that there is no standard. There are not definite working conditions prevalent in this industry and this might be leading in many cases not only to hardship but to exploitation also. There is no doubt that some regulation or regularisation, if I may say so, in this industry would be very useful and beneficial and will make the industry work better.

If we study the problem we will find that one of the main reasons why any such regular working conditions do not exist in this industry is that it is one of the rare industries in this country which require no registration or licensing for carrying on business. Even a *panwalla* requires a licence for carrying on the business of selling *pans*. But here anybody can take up the production with no capital, with some capital or with over capital, if you like, and carry on the business. This might be considered to be a very funny state of affairs, but there it is. It is possible that it is due to this rather vague sort of prevailing condition that there has been no effort to lay down working conditions for the technicians and other people who work in the industry. This is a question worth looking into and certainly I would agree with the hon. Member that this is necessary and should be done. But in order to see that better conditions prevail in the industry a reorganisation or regularisation of the industry on a more stable basis is required. It is possible that if some sort of licensing or registration of the work of film production is taken up we might be able to pin down the various units of production to give better working conditions to those who work in the industry.

The hon. Member had made a reference to the question of very large profits made by the industry and also to the question of qualifications of those who produce films or those who run the industry. I will not say anything about it. The hon. Member has the right to have his own opinions. But, no doubt, in an industry or in any business in which qualifications do not form any criterion for running the business, we will have all sorts of people. It will not be possible to stop anyone from doing or carrying on that business. In fact, they might say that nothing succeeds like success and that is probably the best criterion. But I do agree that in an industry which from many points of view is of national importance because it has become the greatest medium of mass entertainment, a better regularisation of the industry will produce better films on a bigger scale and will be desirable for giving the best of entertainment to the public. But I do not agree that the Resolution of the hon. Member would serve that purpose.

First of all, as I said, a part of the Resolution refers to a suggestion of the Estimates Committee. That suggestion will, no doubt, be considered by Government in due course with other recommendations of the Estimates Committee which will be coming up soon. The other part regard-

[Dr. Keskar]

ing nationalisation, I might suggest o my hon. friend, is too sweeping. Though the intention behind the Resolution is good, I would certainly like him to give specific suggestions regarding this question of better production, more efficient directors and producers and all allied matters. I am, therefore not able to agree wi him and am not able to accept the Resolution on behalf of the Government.

Mr. Speaker: Is he pressing the Resolution?

श्री अ० मु० तारिक : अध्यक्ष महोदय, मैं वजीर इत्तलात व नशरियत का बेहद मशकूर हूं कि इस हाउस में जो कि करीबुल खत्म है और शायद यह मेरी भी और शायद उन की भी आखिरी तकरीर है, उन्हों ने किस खुलूस और किस हमदर्दी से जवाब दिया है और इस के लिये मैं उन को मुबारकबाद देता हूं । मुझे उम्मीद है कि इस इंडस्ट्री को जिन्दा रखने के लिये वह किसी न किसी तरह इस हाउस में वापस आ कर इस की खिदमत करेंगे और इस इंडस्ट्री को मदद करेंगे ।

जहां तक इस चीज का ताल्लुक है कि उन्हों ने यह फरमाया है कि इस में एक कमेटी बनाने की बेहद जरूरत है, मैं उन का निहायत मशकूर हूं, और मुझे उम्मीद है कि वह हुकूमत पर जोर डालेंगे कि इस कमेटी का जल्द से जल्द फैसला किया जाय । जो दौलत की बात कही है, वह खुद जानते हैं कि बहुत से लोग सिर्फ इसलिये कि उन के पास पैसा है, और ब्लैक का पैसा है, वे उस पैसे को इंडस्ट्री में लगा कर लाखों रुपये कमाते हैं । दूसरी तरफ ऐसे लोग हैं, और उन की तादाद बहुत ज्यादा है, जो ८ आ० भी नहीं कमा पाते हैं, और वह आठ आने का रोजगार करते हैं तो उन्हें कई महीने उस ८ आ० को वसूल करने में लग जाते हैं । इस लिहाज से जब हम इस इंडस्ट्री के लिये समझते हैं कि बनने वाले हिन्दुस्तान में उस का बहुत बड़ा हिस्सा होगा, तो मैं समझता हूं कि यह बहुत जरूरी है कि उस में काम करने वाले आदमी निहायत सेहतमन्द हों जिस्मानी तौर पर और जहनी तौर पर ।

इन चन्द अल्फाज के साथ उस हमदर्दाना ऐश्योरेंस पर जो वजीर साहब ने इस हाउस में दिया है, मैं इस रेजोल्यूशन को आप की इजाजत से वापस लेता हूं ।

[شری ع - م - طارق - ادھیکش مہودے - میں وزیر اطلاعات و نشریات کا بیحد مشکور ہوں کہ اس ہاؤس میں جو کہ قریب الختم ہے اور شاید کہ میری بھی اور شاید وزیر صاحب کی بھی آخری تقریر ہے - انہوں نے کس خلوص اور کس ہمدردی سے جواب دیا ہے اور اس کے لئے میں ان کو مبارکباد دیتا ہوں - مجھے امید ہے کہ اس انڈسٹری کو زندہ رکھنے کے لئے وہ کسی نہ کسی طرح اس ہاؤس میں واپس آ کر اس کی خدمت کریں گے اور اس انڈسٹری کو مدد کریں گے -

جہاں تک اس چیز کا تعلق ہے کہ انہوں نے یہ فرمایا ہے کہ اس میں ایک کمیٹی بنانے کی ضرورت ہے - میں ان کا نہایت مشکور ہوں - اور مجھے امید ہے کہ وہ حکومت پر زور ڈالیں گے کہ اس کمیٹی کا جلد سے جلد فیصلہ کیا جائے - جو دولت کی بات کہی ہے - وہ خود جانتے ہیں کہ بہت سے لوگ صرف

اس لئے کہ ان کے پاس پیسہ ہے - اور بلیک کا پیسہ ہے - وے اس پیسے کو انڈسٹری میں لگا کر لاکھوں روپئے کماتے ہیں - دوسری طرف ایسے لوگ ہیں - اور ان کی تعداد بہت زیادہ ہے - جو ۸ آنہ بھی نہیں کما پاتے ہیں - اور جب وہ ۸ آنہ کا روزگار کرتے ہیں تو انہیں کئی مہینوں تک اس ۸ آنہ کو وصول کرنے میں لگ جاتے ہیں - اس لحاظ سے جب ہم اس انڈسٹری کے لئے سمجھتے ہیں کہ بننے والے ہندوستان میں اس کا بہت بڑا حصہ ہوگا - تو میں سمجھتا ہوں کہ یہ ضروری ہے کہ اس میں کام کرنے والے آدمی نہایت صحتمند ہوں جسمانی طور پر اور ذہنی طور پر -

ان چند الفاظ کے ساتھ اس ہمدردانہ ایشیورینس پر جو وزیر صاحب نے ہاؤس میں دیا ہے - میں اس ریزولوشن کو آپ کی اجازت سے واپس لیتا ہوں -)

The Resolution was, by leave, withdrawn.

16.58 hrs.

RESOLUTION RE: CRITERIA FOR BACKWARDNESS

Shri Hem Raj (Kangra): Mr. Speaker, I beg to move the Resolution standing in my name:

"This House recommends to the Government that early steps be taken to fix the criteria of backwardness on the basis of income rather than on the basis of caste, creed and sect and all privileges granted to backward classes on the basis of caste, creed and sect be withdrawn."

जो रेजोल्यूशन मैंने माननीय सदन के सामने रखा है उस की मंशा यह बतलाने की है कि जिस वक्त से बैकवर्ड क्लासेज कमिशन बना और उस ने जो अपनी रिपोर्ट पेश की थी, अगर्चे वह हाउस में पेश नहीं की गई, लेकिन उन्हों ने जो क्राइटीरिया रक्खा था वह जाति पांत का था । उस का नतीजा यह हुआ कि जाति पांत की बिना पर हर एक शख्स ने यह कोशिश की, हर एक जाती ने कोशिश की, कि उस को बैकवर्ड करार दे दिया जाये । यहां पर भी जिस समय सदन के सामने कई सवाल और जवाब हुए उस वक्त मैसूर का खास तौर पर जिक्र किया गया था कि वहां पर ९० परसेन्ट शख्स हैं जिन्हों ने अपने को बैकवर्ड क्लासेज में शुमार करने के लिये कहा था । इस का नतीजा यह हुआ था कि बहुत से ऊंचे क्लास के लोग जिन की आमदनी काफी से ज्यादा थी, उन्हों ने भी अपने आप को बैकवर्ड क्लासेज में रखने के लिये कहां क्योंकि वहां कुछ प्रिविलेजेज मिलते थे । आज यह हालत है । आज हमारे यहां बहुत सी कम्यूनिटी ऐसी हैं जिन के अश्खास की आमदनी हजारों रुपये है लेकिन जाति पांत की बिना पर वह आगे आते हैं और कहते हैं कि चूंकि वह बैकवर्ड कम्यूनिटी के हैं इसलिये बैकवर्ड क्लासेज को जो कुछ कंसेशन्स मिलते हैं वे उन को भी मिलने चाहियें । चूंकि आजकल बैकवर्ड क्लासेज के आदमियों को कुछ कंशेन्स मिलते हैं जोकि फीज के हैं, वजायफ के हैं, नौकरियों के हैं, और चीजों के हैं, इसलिये हर एक कम्यूनिटी इस कोशिश में हैं कि उस को बैकवर्ड कम्युनिटी में आने का मौका मिल जाय ताकि वह कहीं न कहीं आला नौकरियों में आ जायें या उन को कुछ स्कालरशिप्स ज्यादा मिल जायें, हालांकि उन